International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 9, September- 2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

नारी मुक्ति आंदोलन में ज्योतिबा फुले की भूमिका

गुरप्रीत सिंह
इतिहास विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

19वीं शताब्दी के दौरान भारतीय इतिहास में अनेक महान विभूतियां पैदा हुई जिन्होंने अपने प्रयासों में उस समय जर्जर हो चुके राष्ट्र को नवजीवन प्रदान किया था। इन महान् विभूतियों में महात्मा ज्योतिबाराव गोविन्दराव फुले को अग्रणी स्थान प्राप्त है। वे एक दलित नेता व समाज सुधारक थे। दलित होने के बावजूद वे हिन्दू रूढ़िवादियों, अस्पृश्यता व जातिवाद के विरोधी थे। उन्होंने सत्यशोधक समाज का निर्माण करके भारतीय समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने का अथक प्रयास किया।

ज्योतिबा फुले का मानना था। कि भारतीय समाज में स्त्रियों की समस्या दिन प्रतिदिन गम्भीर होगी जा रही थी। समाज में स्त्रियों को कई शताब्दियों से उनके मानव अधिकार, वेदाध्ययन तथा अनेक धार्मिक अधिकारों व क्रियाकलापों से वंचित रखा गया था। स्त्री को अपना जीवन बचपन में पिता, युवावस्था में पति तथा वृद्धावस्था में पुत्र की छाया में व्यतीत करना पड़ता था।[i] जो स्त्रियां बार–बार पुत्रियों को जन्म दे रही थी। समाज में उनको अपमान व तिरस्कार सहन करना पड़ता था। ना जाने कितनी स्त्री–विरोधी अमानवीय कुप्रथाएं भारतीय समाज में प्रचलित हो चुकी थी समाज में ब्राह्मणों एवं पुरोहितों के पाखण्ड और आडम्बर हावी हो गए थे। सम्पूर्ण स्त्री समाज इससे प्रभावित हो रहा था। ऐसी रूढ़ियों और बंधनों के कारण हिन्दू धर्म में निरन्तर गिरावट आती जा रही थी।[ii]

ज्योतिबा फुले का मानना था कि **'मनुस्मृति'** जैसे ग्रन्थों ने तो स्त्री पर बहुत बड़ा अन्याय किया। वस्तुतः मनु स्मृति जैसे ग्रन्थों की व्यवस्थाओं ने ही भारत में लिंग भेद के लिए सशक्त आधार प्रदान किया। इसलिए वे ऐसे ग्रन्थों को जला डालने तक की सलाह देते थे।[iii]

फुले के अनुसार समाज में अज्ञानता व अंधविश्वास के कारण ही लिंगभेद पर आधारित प्रथाएं मान्य हो गए थी। वे निहित–स्वार्थी तत्वों द्वारा भी मान्य ठहराई गई थी। ब्राह्मण किसी भी सामाजिक बुराई को शास्त्रोचित बताकर उसे धार्मिक आधार प्रदान करते थे। समाज में ब्राह्मणवाद की सबसे बड़ी शिकार महिलाएं बनी थी। यह विचारधारा सारी सामाजिक समस्याओं एवं कुरीतियों के लिए जिम्मेदार थी। चाहे वह सती प्रथा हो, विधवा प्रथा हो, बाल विवाह हो, वैश्यावृत्ति हो या बाल हत्या सभी के लिए यह जिम्मेवार थी। ये सारी कुप्रथाएं स्त्रियों के जीवन को निम्न से निम्नतम बनाती जा रही थी।[iv]

ब्राह्मणवादी विचारधारा के कारण स्त्रियों को किसी भी धार्मिक एंव सामाजिक कार्य में भाग लेने की आज्ञा नहीं थी। स्त्रियों को अनेक धार्मिक कार्यों के लिए अयोग्य माना जाता था। विधवाओं को तो 'अशुभ' व अपवित्र समझा जाता था। इसके विपरित किसी विधुर को अशुभ नही माना जाता था। यहां तक कि स्त्री के मरने पर उसकी अंत्येष्टि के समय ही उसके पति का पुनर्विवाह निश्चित कर दिया जाता था।[v] भारतीय समाज में स्त्रियों का जीवन नरक के समान हो गया था। उसकी समस्त खुशियां छीन ली जाती थी। विधवाओं की दुर्दशा के सम्बन्ध में फुले अपनी एक रचना के माध्यम से पूछते है।

''यह किस दुनिया का न्याय है कि पति के मरते ही औरत पति के शव के पांव का अंगूठा अपने हाथ में लेकर हज्जाम के हाथों अपना सिर मुंडवा ले तन पर चढ़े हुए सभी गहने बूढ़े ससुर के हाथ में रखकर स्वयं अपने हाथों में तुलसी की माला पहने भिस्वादिनी हो जाए, मीठे पदार्थों को बिल्कुल न खाने का संकल्प करे, एक के बाद एक लगातार उपवास करे, नाश्ते में अगर कुछ ना मिले तो सारा दिन बिना खाए–पीए गुजारा करे और सारी उम्र घर के तुच्छ कामों में अपने आप को झोंक दे ? यह कहां तक न्यायोचित है।[vi]

ज्योतिबा फुले का विचार था कि समाज के ऐसे सार नियम एंव परम्पराएं ब्राह्मणों ने अपने प्रभाव व वर्चस्व को लोगों के दिलो–दिमाग पर कायम रखने के लिए बनाए ताकि उनके स्वार्थ की पूर्ति होती रहे।

अपने ऐसे स्वार्थों की पूर्ति के लिए उन्होंने कई तरह के हथकंडे अपनाएं जिनमें ये कामयाब भी रहे।[vii] इसका एक उदाहरण उन्होंने बंगाल में प्रचलित एक रिवाज का दिया जिसके अनुसार अनेक नृतक लड़कियां मंदिरों की सेवा करती थी। ये लड़कियां देवदासियों के नाम से जानी जाती थी।[viii] इस रिवाज के कारण मंदिरों में वेश्यावृत्ति जैसी घृणित प्रथा प्रचलित हो चुकी थी क्योंकि मंदिरों के पुजारी देवदासियों को वेश्याओं की तरह इस्तेमाल करते थे।[ix] इस प्रथा के कारण मंदिरों के पुजारियों का चरित्र अत्यधिक गिर चुका था और ऐसे मंदिर वेश्यावृत्ति का अड्डा बन गए थे।[x]

ज्योतिबा फुले का मानना था कि तमाम सामाजिक कुरीतियों की जड़े प्राचीन धार्मिक व्यवस्था तक जा पहुंची थी। 'मनुस्मृति' के अनुसार कन्या का विवाह जितनी जल्दी हो सके कर देना चाहिए, नही ंतो वह **'पाप की भागी'** बन जाएगी। शास्त्रों में इस प्रथा के वर्णित होने के कारण समाज में इसे अपना लिया गया और यह प्रथा आगे चलकर कई अन्य कुप्रथाओं का कारण भी बनी फुले[xi] ने अपनी रचनाओं व नाटकों आदि बताया कि ब्राह्मणों ने अपने नकली ग्रन्थों में यह दिखाने की पूरी कोशिश की कि उन्हें जो विशेष अधिकार प्राप्त हो, वे सब उन्हें ईश्वर द्वारा प्रद्त है। उस तरह का झूठा प्रचार उसे समय अनपढ़ लोगों में काफी किया गया। नारी जाति अबला होती थी। इसलिए इन स्वार्थी पुरूषों ने बड़ी चालाकी से यह तय कर दिया कि किसी भी काम में नारी की स्वीकृति लेना जरूरी नहीं है। उन्होंने हर क्षेत्र में अपने ही वर्चस्व को बढाया। नारी को अपने मानवीय हक समझ न आए, इसके लिए उन्होंने नारी को पढ़ने लिखने के अधिकार से वंचित कर दिया गया।[xii] इसी कारण तत्कालीन समाज में शिक्षा का पूर्ण का अभाव था और महिला शिक्षा का तो प्रश्न ही नहीं उठता था। इसलिए फुले के अनुसार पुरूषों के तुलना में ब्राह्मणवाद का अधिक शिकार स्त्रियां हुई थी।

ज्योतिबा द्वारा रचित 'किसान का कोड़ा' नामक रचना से हमें जानकारी मिलती है कि किस प्रकार गणेश–चतुर्थी पर किसानों के घर में गणपति के सामने तालियां बजाकर आरती गाने के बदले में पुरोहित

उनसे दक्षिणा ले लेते थे। ऋषि–पंचमी को विधवा किसान औरतों को पानी के गड्ढे में डुबकियां लगवाने के लिए मजबूर कर देते थे। फिर ऊपरी तौर पर कीर्तन सुनने का भाव दिखाकर मन में रात–भर बदनाम नर्तकी की सूरत की निहारते और उसके सुरीले गाने सुनने में मशगूल हो जाते थे। वे किसानों को पीछे तो इतने दुर्बल व अपाहिज विधवा औरतों तक से गणपति के नाम से दक्षिणा ले लेते थे और पाँव पर उनका माथा टिकवाये बगैर उनको मुक्त नहीं करते थे।[xiii]

गरीब स्त्रियों की दुर्दशा की जानकारी फुले ने अपनी रचना 'इशारा' में दी है कि किस प्रकार किसान की पत्नी ने साहूकार से प्रार्थना की कि ''थोड़ा रहम कीजिए। कुछ अनाज तो इन मासूम बच्चों के लिए रहने दीजिए। मेरी दोनों हाथ जोड़ कर आपसे प्रार्थना है। ''गरीब नारी का इतना भाषण सुनकर वह साहूकार गुस्से में आंखे चढ़ाकर कहता है कि ''मूर्ख कहीं की शुद्रिन होकर तू हम को ज्ञान सिखाना चाहती है।''[xiv]

कुल मिलाकर हम कह सकते है कि जयोतिबा फुले पहले ऐसे समाज सुधारक थे। जिन्होंने हिन्दू धर्म एवं परम्परा के विरूद्ध नारी की समानता के पक्ष में खुलकर आवाज उठाई वे एक क्रान्तिकारी विद्वान व समाज के सुधार के लिए प्रयोग किया। उन्हें विशेष रूप से महिला उत्थान के लिए याद किया जाता है। बेशक पुरूष प्रधान हिन्दू समाज व्यवस्था में कई शताब्दियों से अज्ञान व अन्याय से घिरी हुई नारियों के लिए आधुनिक युग में वे 'मुक्तिदाता' बनकर सामने आए। अतः यह कहा जा सकता है कि नारी मुक्ति की दिशा में ज्योतिबा फुले का योगदान सराहनीय है।

संदर्भ

[i] रामधारी सिंह दिनकर, ''संस्कृति के चार अध्याय'', इलाहाबाद, 1954, पृ० 54

[ii] मुरलीधर जगताप, 'युगपुरूष महात्मा फुले, महात्मा फुले चरित्र साधने प्रकाशन समिति, बम्बई, 1993, पृ० 54

[iii] वेद कुमार वेदालंकार (अनु०), ''गुलामी महात्मा फुले चरित्र साधने, प्रकाशन समिति, बम्बई, 1994, पृ० 13

[iv] राधा कुमार, स्त्री संघर्ष का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ० 3

[v] वही, पृ० 16

[vi] एल० जी० मेश्राम, 'विमलकीर्ति, महात्मा ज्योतिबा फुले रचनावली, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ० 50

[vii] रोजा लिजाओं हैनलॉन, ''कास्ट कनफिलक्ट एण्ड आइडियोलाजी पर्मानेन्ट ब्लैक'', रानीखेत, 2010, पृ० 91

[viii] ए० आर० देसाई, भारतीय राष्ट्र की सामाजिक पृष्ठभूमि, नई दिल्ली, 1976, पृ० 220

[ix] के० के० दत्त, ए सोशल हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इण्डिया, नई दिल्ली, 1975, पृ० 153

[x] ए० आर० देसाई, पूर्व उद्धरित, पृ० 221

[xi] वी० के० काणे, हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्रज, पृ० 52

[xii] मुरलीधर जगताप, पूर्व उद्धरित, पृ० 102

[xiii] मुरलीधर जगताप, पूर्व उद्धरित, पृ० 102

[xiv] रोजा लिजाओं हैनलॉन, पूर्व उद्धरित, पृ० 216